Sources of Egyptian History

विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में प्राचीन मिस्र की सभ्यता प्रमुख है जिसे नील की देन कहा जाता है क्योंकि वहाँ तक मिस्र के सुख और समृद्धि का कारण नील नदी ही रही है। मिस्र की प्राचीन सभ्यता का प्रारम्भ कब हुआ इस विषय पर इतिहासकारों के बीच मतभेद है, परन्तु कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इस सभ्यता का प्रारम्भ लगभग 10000 B.C से पुरानी है।

सामान्य रूप से किसी भी विषय के अध्ययन करने और उसकी जानकारी के लिए अनेक स्रोतों का सहारा लेना पड़ता है, उसी प्रकार प्राचीन मिस्र की सभ्यता के भी अनेक स्रोत हैं जिससे उसकी जानकारी मिल सकती है।

1. साहित्यिक स्रोत :- साहित्यिक स्रोत प्राचीन मिस्र के स्रोतों में प्रमुख है। बाइबिल, यूनान के हेरोडोटस की कृति, रोम के डायोडोरस की कृति और मिस्र के मनेथो की कृति मिस्र के साहित्यिक स्रोतों में प्रमुख हैं जिससे मिस्री इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। 18 वीं शताब्दी के लगभग मिस्री इतिहास की जानकारी के लिए कथित स्रोतों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। यद्यपि ये स्रोत भी अपने आप में पूर्ण नहीं थे।

पवित्र ग्रन्थ बाईबिल धार्मिक होने के कारण मिस्र के इतिहास की जानकारी देने में असमर्थ है। मिस्र के साहित्यिक इतिहासकारों में हेरोडोटस, भूगोलवेत्ता स्ट्रेबो, क्रिश्चियन वंशलेखन, जोसेफस, अफ्रीकियन और यूसेबियस के नाम प्रमुख हैं। प्राचीन मिस्र के इतिहास के सम्बंध में इन विद्वानों की रचना महत्वपूर्ण है। चूँकि इन्हें मिस्री भाषा का ज्ञान नहीं था इसलिए मिस्री ग्रन्थों को पढ़ने में असमर्थ थे। फिर भी प्राप्त अन्य साधनों के आधार पर यत्र-तत्र अपने विचार व्यक्त किए हैं। प्रथम यूनानी इतिहासकार हिकाटियस की रचनाएं मिस्र के पुरोहित के सूचनाओं के आधार पर आधारित हैं।

दूसरा यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने मेम्फिस, हेलियोपोलिस और मिस्र के विभिन्न भागों का निरीक्षण किया था और पुरोहितों से घनिष्ठ सम्बंध स्थापित कर उनकी सूचनाओं के आधार पर पुरातन मिस्र के सम्बंध में पुस्तकें लिखीं। इसमें उसने अपने घाटी में रहनेवाले अनुभवों का भी उल्लेख किया परन्तु वे मिस्र के स्मारकों की जानकारी देने में सक्षम नहीं थे।

यूनान और मिस्र के बीच सम्बंधों का विकास 326 B.C में सिकन्दर के मिस्री आक्रमण के बाद हुआ। टॉलेमी ने मिस्र के ऊपर 4th और 3rd शताब्दी में शासन किया। इसकाल का भूगोलवेत्ता इरेटोस्थनीज ने घाटी को सबसे पहले अक्षांश के समानान्तर तक अपने प्रसार की स्थापना की जिसका अनुकरण स्ट्रेबो, प्लूटॉर्क ने किया। प्लूटॉर्क ने इसिस और ओसिरिस देवता पर ग्रन्थ की रचना की जिसमें प्राचीन मिस्री धर्म की विशेषता का उल्लेख है।

-पूर्ण है।

साहित्यिक स्रोतों में सेबेनाईट्स के पुजारी 'मनेथो' की कृति प्राचीन मिस्र की जानकारी के लिए महत्वपूर्ण है। मिस्र पर यूनानी आधिपत्य के बाद मिस्र में इतिहास लिखने की वास्तविक परम्परा शुरू होती है। यूनान के शासक 'टॉलेमी' ने मनेथो को इतिहास लिखने का कार्य सौंपा। उसने उसे मिस्र के अभिलेखों को संग्रह करने और उसका अनुवाद करने का आदेश दिया। अतः पहली बार मनेथो की कृति प्रधान स्रोत के रूप में प्रकट हुई। मनेथो की पुस्तक 'इडीप्सिया' (IDIPSIA) है। यह पुस्तक मूल रूप से उपलब्ध नहीं है।

मनेथो की मृत्यु के 600 वर्षों बाद इस मूलप्रति का नकल किया गया। परिणामस्वरूप मनेथो के पुस्तक के आधार पर तत्कालीन मिस्र के इतिहास की व्याख्या अलग-2 विद्वानों ने अलग-2 ढंग से किया है। Brested – A History of Egypt – 18 के अनुसार मनेथो द्वारा लिखित ग्रामीण कहानियों का संग्रह मुश्किल से इतिहास कहलाने योग्य है। ब्रेस्टेड ने मनेथो द्वारा तय की गई वंशावली को गलत बताया है। H.R Hall ने मनेथो की कृति को महत्वपूर्ण माना है। उसके अनुसार मनेथो द्वारा तैयार की गई वंशावली सही है परन्तु अपूर्ण अभिलेखों को यह छोड़ दिया है इसलिए कुछ विद्वानों ने उसके वंशावली को गलत माना है।

2. पुरातात्विक स्रोत :→ पुरातात्विक सामग्रियाँ मिस्र के इतिहास की जानकारी की अमूल्य धरोहर हैं। इनके माध्यम से मिस्र के प्राचीन राजनीति एवं संस्कृति विशेष के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

पुरातात्विक सामग्रियों को दो भागों में बाँटा जा सकता है — कलात्मक सामग्रियाँ और साहित्यिक सामग्रियाँ।

कलात्मक सामग्रियों में मिस्र के अभिलेख, स्मारक, पिरामिड, मंदिर, मूर्ति, भित्तिचित्र, युद्ध के हथियार, वस्त्राभूषण आदि सम्मिलित हैं। ये विभिन्न सामग्रियाँ मिस्र के उत्खनन से प्राप्त हुई हैं। पिरामिड, मंदिर और मूर्तियों आदि से मिस्र की सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास की जानकारी मिलती है।

पुरातात्विक सामग्रियों में वे ग्रन्थ और

भी शामिल हैं जो हमें विभिन्न रूप से उपलब्ध हुए हैं। मंदिरों और पिरामिडों की भित्तियों और पाषाण खण्डों पर अनेक अभिलेख लिपिबद्ध रूप में हमें प्राप्त हुए हैं। पेपिरस पर लिपिबद्ध किए गए कुछ ग्रन्थ मिले हैं जिनके माध्यम से मिस्र के प्राचीन इतिहास और राजाओं की वंश तालिका जानी जा सकती है। अधिकांश पेपिरस घरों के खण्डहरों या नगर के कूड़ादानों से मिले हैं। कुछ कब्रिस्तान पाए गए हैं जिनमें मृत व्यक्तियों को पुराने मिस्री ढंग से मसाले लगाकर लम्बी मंजूषाओं में रख दिया जाता था। इस प्रकार पुरातात्विक साहित्य के माध्यम से पेपिरस और मुर्दे गाड़ने की जानकारी मिलती है। बहुत दिनों तक विद्वानों द्वारा खुदाई का कोई महत्व नहीं समझा जाता था लेकिन अब ठोस इतिहास को जानने के लिए इनका महत्व महसूस किया जाने लगा। खुदाई से प्राप्त सामग्री के आधार पर पता चलता है कि लिखने की प्रथा मिस्रवासियों के बीच हजा-रो वर्ष पहले से ही थी। खुदाई में एक ऐसा कब्रगाह मिला है जिसमें एक घड़ियाल को मसाला लगाकर धार्मिक संस्कार से दफनाया गया था जिससे स्पष्ट होता है कि घड़ियाल को पूजा जाता था।

खुदाई से पॉन्च शासकों की सूची मिली है जिसमें एबिडास के पट्टी प्रथम है। यह सूची सेथी के मंदिर पर लिखा है। इस पट्टी में 76 शासकों का उल्लेख है। कार्नाक से प्राप्त दूसरी पट्टी से राजनीतिक स्थिति की जानकारी मिलती है। इसमें 62 राजाओं के नाम अंकित है। साक्कारा के अभिलेखों से 47 राजाओं की जानकारी मिलती है। राजाओं की ये सूचियाँ ट्यूरिन म्यूजियम में उपलब्ध है।

1881 - 1906 के बीच जो खोजें हुई हैं उनमें एबिडास के प्रारम्भिक वंश के राजाओं की मीनारें और अरवनातन के मीनारों से पाई गई, तेल-अल-अमरना से कुछ अभिलेख मिले हैं जिनके अध्ययन से मिस्री राजदर-बारों का अनातोलिया, असीरिया, बेबीलोनिया, साईप्रस मितानी, सीरिया और फैलेस्टाइन के नगर से अच्छे संबंधों की जानकारी मिलती है। इन ग्रन्थों से तात्कालीन व्यापार समाज, धर्म और भूगोल की जानकारी होती है। इस प्रकार पुरातात्विक स्रोत मिस्री इतिहास की जानकारी के लिए महत्वपूर्ण है।

आधुनिक काल की सामग्रियाँ :→ प्राचीन मिस्र के इतिहास की जानकारी के लिए आधुनिक काल की सामग्रियाँ भी काफी हद तक उत्तरदायी रहीं। फ्रांस में नेपोलियन के उत्कर्ष और उसके मिस्री अभियान मिस्री इतिहास

की जानकारी के प्रमुख स्रोत है। इस काल में मिस्री विद्या का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। फ्रांसीसी विद्वान शापेल्यो ने मिस्री चित्रात्मक लिपि का अध्ययन किया और मिस्र के इतिहास को क्रमबद्ध किया।

एक ब्रिटिश विद्वान डा० टॉमस यंग ने एक स्तम्भ का पता लगाया जिसके निचले हिस्से पर यूनानी भाषा अंकित थी और उसके चोटी पर मिस्री लिपि अंकित थी। इन चित्राक्षरों का अध्ययन धीरे-2 हुई और मिस्र के इतिहास की जानकारी मिलती गई।

चित्राक्षरों के ऐसे ही अध्ययन और अनेक विद्वानों ने मिस्र के इतिहास लेखन का प्रारम्भ कर दिया। 'वीडमान', 'ब्रेस्टेड' ने विद्या के अध्ययन के क्रम को बढ़ा कर मिस्र के इतिहास की जानकारी के क्षेत्र का विस्तार किया।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्राचीन मिस्र के स्रोतों में साहित्यिक, पुरातात्विक और आधुनिक काल की सामग्रियाँ महत्वपूर्ण हैं। साहित्यिक स्रोतों के अनेक विद्वानों में हेरोडोटस, डायोडोरस और मनेथो की कृतियां प्रमुख हैं जिनके माध्यम से मिस्री साहित्यों का अध्ययन कर मिस्री इतिहास की जानकारी मिली। [पुरातात्विक सामग्रियों ने भी मिस्री इतिहास के स्रोत के क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण योगदान दिया] विशेष कर पुरातात्विक स्रोतों को ही प्रधानता दी जा सकती है क्योंकि साहित्यिक स्रोत कुछ दोषपूर्ण प्रतीत होते हैं। इसलिए पिरामिडों, मंदिरों, स्मारकों आदि के जो खण्डहर मिले हैं उनके अध्ययन से ही हमें प्राचीन मिस्र के इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।